राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान

(केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्)

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

चेरुतुरुत्ति (टाक), त्रिशूर, केरल-679 531

NATIONAL AYURVEDA RESEARCH INSTITUTE FOR PANCHAKARMA
(Central Council for Research in Ayurvedic Sciences)

Ministry of AYUSH, Govt. of India P.O. CHERUTHURUTHY,

THRISSUR DIST., KERALA — 679 531

आवेदन फ़ॉर्म

APPLICATION FORM

(मर्म चिकित्सा के प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने हेतु)

(For admission to Certificate Course in Marma Chikitsa)

फोटो
Photo

I. पूरा नाम (बड़े अक्षरों में) :
Name in full (Capital Letters)

II. लिंग :
Sex

III. आयु और जन्म तिथि :
Age & Date ofBirth

IV. पिन कोड के साथ स्थायी पता :
Permanent Address with PinCode

V. पत्राचार पता :
Correspondence address

VI. फोन/मोबाइल नं और ई-मेल आईडी :
Contact Number and E-mail id

VII. राष्ट्रीयता और धर्म :
Nationality &Religion

VIII स्थायी पंजीयन संख्या :
Permanent RegistrationNumber

IX. पंजीयन राज्य :
State of registration

X. नियोक्ता का विवरण (यदि कार्यरत हो) :
Details of the employer (If working)

XI. बैच जिसमें जॉइन करने के इच्छुक हों
Batch in which intents to join :

XII. शैक्षणिक योग्यता :
Educational qualification

	BAMS बीएएमएस	MD एमडी
उत्तीर्ण परीक्षा का नाम Name of the Examination Passed		
विश्विद्यालय/ बोर्ड University/ Board		
उत्तीर्ण वर्ष Year of passing		
प्राप्तांकों का प्रतिशत % of marks obtained		

घोषणा
Declaration

मै एतद्वारा घोषणा करता/ करती हूँ कि आवेदन में दिए गए सभी विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य और सही हैं। यदि किसी स्तर पर कोई सूचना असत्य पाई जाती है तो मेरी उम्मीदवारी बिना किसी सूचना के तुरंत रद्द कर दी जाएगी।

I hereby declared that all the statements made in the application are true and correct to the best of my knowledge and belief. If any information being found false or incorrect at any state my candidature shall be liable to be cancelled summarily without notice.

आवेदक के हस्ताक्षर
Signature of the applicant

स्थान:
Place

तिथि:
Date

मर्मचिकित्सा

मर्मचिकित्सा विभिन्न गैर- भेषजगुण विज्ञानीय उपचारों में से एक है जिसका आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानव शरीर की रचना और कार्यप्रणाली की गहरी समझ पर आधारित है जो कि विभिन्न चालन तकनीकों से जटिल प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हुए निवारक व चिकित्सीय स्वास्थ्य लाभ के लिए शरीर के विभिन्न बिंदुओं या क्षेत्रों का उपयोग करती है। मर्म, परिभाषा के अनुसार, शरीर में प्राण (जीवन शक्ति) के विभिन्न बिंदु या विशिष्ट स्थान हैं। वेदों से लेकर महाकाव्यों तक के प्राचीन इंडोलॉजिकल ग्रंथों में मर्मचिकित्सा की मूल अवधारणाओं का अच्छी तरह से वर्णन किया गया है। इस तरह के उपचारों का नैदानिक अभ्यास में चिकित्सकों द्वारा अभ्यास किया जाता है और इसे अपनाया जाता है तथा ऐसे उपचारों की सुरक्षा समय की कसौटी पर खरी उतरती है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: मर्म के ज्ञान को अत्यधिक गुप्त रखा गया था, जो कि उन कारणों में से एक है जो इसे सामान्य चिकित्सा पद्धतियों से ज्ञान की इस शाखा को क्रमिक ह्रास की ओर ले जाते हैं। लेकिन अब भी, कुछ गिने चुने ऐसे व्यक्ति हैं जो इस प्राचीन कला को अच्छी तरह जानते हैं और इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं और विश्व में इस ज्ञान का प्रचार भी करते हैं। केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने पहल की है जिसमें मर्मचिकित्सा के विभिन्न विशेषज्ञों से इस के सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान को प्रलेखित और संकलित किया गया ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस ज्ञान को संरक्षित किया जा सके और इसे आयुर्वेद नैदानिक अभ्यास की मुख्यधारा में लाया जा सके। इस प्राचीन विज्ञान को मुख्यधारा में लाने और आयुर्वेद चिकित्सकों को उचित प्रशिक्षण देने के लिए, उचित प्रशिक्षण मॉड्यूल की योजना बनाई गई है।

चूंकि मर्मचिकित्सा में उपयोग की जाने वाली कई तकनीकें/विधियां/प्रक्रियाएं यदि अप्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा की जायें तो वे संभावित गंभीर नुकसान पहुंचा सकती हैं, इसलिए इन तकनीकों का अभ्यास विशेषज्ञ चिकित्सक के अधीन उचित प्रशिक्षण के बाद ही किया जाना चाहिए। मर्मचिकित्सा की तकनीकों/विधियों/प्रक्रियाओं के उचित निष्पादन के लिए विशेषज्ञों की देखरेख में उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, अध्येताओं को किसी भी भ्रम से बचाने के लिए विभिन्न परंपराओं में कई भिन्नताओं को दूर करने की आवश्यकता है। कुछ मर्म बिंदुओं के मेनिपुलेशन से लाभ की तुलना में संभावित नुकसान अधिक होता है जिसे अध्येता को ठीक से बताने की आवश्यकता होती है। इन उद्देश्यों के साथ, आयुर्वेद के स्नातकों के लिए एक महीने की अवधि का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित किया गया है जिसमें मर्मचिकित्सा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं को शामिल किया गया है।

सीसीआरएएस के अंतर्गत राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान 21 जून 1971 को शुरू किया गया था और इस संस्थान में पिछले कुछ वर्षों में मूल सुविधाओं के मामले में जबरदस्त वृद्धि हुई है और रोगियों का उपचार ओपीडी और आईपीडी दोनों में किया जा रहा है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान वर्ष में दो बार एक महीने के लिए मर्म चिकित्सा (सीसीएमसी) में एक सर्टिफिकेट कोर्स आयोजित कर रहा है। प्रत्येक बैच में आयुर्वेदिक स्नातकों के 20 अध्येता होते हैं जिनका उद्देश्य मर्म चिकित्सा के सिद्धांत और व्यावहारिक पहलुओं के बारे में मूल जानकारी प्रदान करना है। इस कोर्स को केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है। पाठ्यक्रम को किसी भी राज्य सरकार या सीसीआईएम या किसी विश्वविद्यालय द्वारा कोई मान्यता प्राप्त नहीं है।

यह सीसीएमसी कोर्स बीएएमएस के मेडिकल प्रैक्टिशनर्स और सेवारत उम्मीदवारों के लिए खुला है। इच्छुक व्यक्ति आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं और यदि वे सेवा में हैं, तो सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के बाद मेडिकल डिग्री, मेडिकल पंजीकरण प्रमाण पत्र की प्रतियों के साथ आवेदन कर सकते हैं । सेवारत उम्मीदवारों को उचित चैनल के माध्यम से ही आवेदन करना चाहिए।

सभी ठीक से भरे हुए आवेदन निदेशक, एनएआरआईपी चेरुतुरुत्ति पीओ- 679531 को ई-मेल/ पोस्ट द्वारा भेजे जाने चाहिए। प्रवेश पहले आओ पहले पाओ के आधार पर है।

संस्थान प्रशिक्षुओं के लिए ठहरने और खाने की कोई सुविधा प्रदान नहीं करता है। हालांकि जरूरत पड़ने पर वे सभी दिनों में कैंटीन की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। भारतीय नागरिकों के लिए पाठ्यक्रम शुल्क 15000/- रुपये है, जैसा कि आयुष मंत्रालय द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाता है। संस्थान को राशि राष्ट्रीकृत बैंक के डीडी के माध्यम से भेजी जा सकती है। संस्थान के ई-मेल पते- ccmc.narip@gmail.com nrip.cheruthuruthy@gmail.com से और अधिक जानकारी मांगी जा सकती है। डाक पत्राचार पर विचार नहीं किया जाएगा।

संस्थान का डाक पता निम्नानुसार है:

निदेशक
राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान
चेरुतुरुत्ति -679531, त्रिशूर (जिला)
केरल: भारत

ईमेल पता: ccmc.narip@gmail.com

nrip.cheruthuruthy@gmail.com

संपर्क संख्या: 04884-262543, 262544

Marmachikitsa

Marmacikitsā is one among the various non-pharmacological therapies having an important place Āyurveda. It is based on a deep understanding of the design and working of the human body which utilizes various points or areas of the body for preventive and therapeutic health benefits using the various manipulative techniques to complex procedures. Marma, by definition, are the various seats or specific locations of Prāṇa (life force) in the body. The basic concepts of Marmacikitsā are well described in the ancient Indological texts right from Vedas to Epics. Such therapies are practiced and adopted by physicians in the clinical practice and the safety of such therapies stood the test of time.

Objectives of the course: The knowledge of Marma was kept highly secretive nature is one of the reasons which lead to the gradual diminution of this branch of knowledge from the general healing practices. But even now, there are selected few individuals who are well versed of this ancient art and keeping the tradition alive and also propagating the science in this world. The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences has taken initiatives wherein such knowledge, both theoretical and applied were documented from various experts of Marmacikitsā and compiled so as to preserve this knowledge for future generations and bring it to the mainstream of Āyurveda clinical practice. In order to mainstream this ancient science and impart proper training to Ayurveda doctors, proper training modules are planned.

Since many techniques/methods/procedures used in Marmacikitsā can cause potential serious harm if done by untrained persons, these techniques are to be practiced only after proper training under expert practitioner. Proper hands on training under supervision of field experts are required for proper execution of techniques/methods/procedures of Marmacikitsā. Also, there are numerous variations among the various traditions which need to be addressed to avoid any confusion to the student. Manipulations of few Marma points have more potential harm than benefits which needs to be properly conveyed to the student. With these objectives, a training course of one-month duration for graduates of Ayurveda has been developed covering the theoretical and practical aspects of Marmacikitsā.

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma was started on 21st June 1971 under CCRAS and has over the years grown tremendously in terms of infrastructural facilities and the numbers of patients are being treated in both OPD and IPD.

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma is conducting a Certificate Course in Marma Chikitsa (CCMC) for one month twice in a year. Each batch consists of 20 candidates of Ayurvedic graduates aimed to provide basic exposure to the theory and practical aspects of Marma chikitsa. This Course is recognized by Central Council for Research in Ayurvedic Sciences, New Delhi. The course has no recognition by any state government or CCIM or affiliated to any University.

This CCMC course is open to the Medical Practitioners and service candidates of BAMS. Interested persons may download the application form and apply with the copies of

Medical Degree, Medical Registration Certificate followed by permission of the competent authority, if they are in service. Service candidates should apply through proper channel only.

All properly filled applications should be sent to the Director, NARIP, Cheruthuruthy P.O.-679531, by e-mail. Admission is based on first come first serve basis.

The Institute does not provide any lodging and boarding facility for the trainees. However in need they can avail the canteen facility on all days. The Course fee for Indian Nationals is Rs.15000/-as prescribed by Ministry of AYUSH from time to time. Queries and further information may be sought from the Institute's E-mail address- ccmc.narip@gmail.com, nrip.cheruthuruthy@gmail.com. Postal correspondence will not be entertained.

Postal address of the Institute as under

The Director

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma

Cheruthuruthy-679531, Thrissur (Dist)

Kerala, India

E-mail address: ccmc.narip@gmail.com

nrip.cheruthuruthy@gmail.com

Contact number: 04884-262543, 262544